पुस्तक समीक्षा

भाषा पर हुए अध्ययनों से परिचित कराती है ये कृति

अजा शर्मा

हाल ही में नई शिक्षा नीति की घोषणा की गई और भाषा सीखने-सिखाने पर फिर एक बहस छिड़ गई। ऐसे समय इस किताब को पढ़ना, भाषा सीखने-सिखाने की इन बहसों को समझने में मदद करता है। यह किताब कई लेखों का एक ऐसा संकलन है जो भाषा के स्वरुप, उसके विकास, भाषा विज्ञान और भाषा पर हुए अध्ययनों को हमारे सामने खोल कर रखते हैं। यह किताब मन में इन लेखों के सन्दर्भ में कक्षा अनुभवों पर और अब तक की भाषा की समझ पर आगे अवलोकन और शोध करने के लिए प्रेरित ज़रूर करती है। भाषा शिक्षण में शामिल शोधकर्ताओं, शिक्षकों, एनजीओ कर्मियों और नीतियों को लिखने व उनपर टिप्पणी करने वाले - ऐसे सभी लोगों के लिए यह किताब कई नज़रिए खोल सकती है।इस किताब का रिव्यु मैं एक पाठक की तरह कर रही हूँ जो अभी भाषा के ताने-बाने को समझने के सफर पर है।

यह संकलन चार खण्डों में विभाजित है। मेरे विचार में आप किसी भी खण्ड के किसी भी लेख से इस किताब को पढ़ने का सफर शुरू कर सकते हैं। घूम के वापस किसी लेख पर आ सकते हैं। संकलन आपको यह स्वतंत्रता देता है। भाषा शिक्षण व प्रशिक्षण में अपने सीमित अनुभव से कह सकती हूँ कि हिन्दी में ऐसा संकलन मुझे कभी प्राप्त नहीं हुआ। यहाँ अनुवाद महज़ अनुवाद न होकर लेख की मौलिकता को कायम रखता है और उदाहरण काफी मददगार हैं। उम्मीद है कि इस संकलन में आगे भी कुछ श्रृंखलाएँ जुड़ेंगी।

पुस्तक - भाषा का बुनियादी ताना-बाना - एक संकलन
चयन व सम्पादन- रजनी द्विवेदी और हृदयकान्त दीवान
प्रकाशक- एकलव्य प्रकाशन व अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी

पहला खण्ड भाषा की प्रकृति और गुण के बारे में है। यह खण्ड कुछ मुश्किल है। इस खण्ड को पढ़ने, इस पर विचार करने में, काफी समय लगा। वैसे कोई खण्ड ऐसा नहीं है कि आप बिना विचार किए, या विचारों में उलझे बस आगे पढ़ते चले जाएँ। पर यह खण्ड खासतौर से काफी समय लेता है, कुछ जटिल है। शायद इसलिए भी कि आमतौर पर इस खण्ड में प्रस्तुत लेख, शोध, बातचीत, कॉम्प्लेक्स विषयों को खोलते हैं जिनपर गहराई में बात अक्सर कम होती है खासकर भाषा शिक्षकों के बीच। शिक्षक प्रशिक्षणों, भाषा कक्षाओं में अक्सर पढ़ाने के तरीकों पर काफी गहनता से बात होती है। इस लिहाज़ से यह किताब एक गहरे अध्ययन की माँग करती है। खण्ड एक, कई सारे उदाहरणों द्वारा विषय को समझाने का प्रयास करता है। जगह-जगह तकनीकी शब्दों को अँग्रेज़ी में भी ब्रैकेट में लिखा गया है जिससे उन्हें समझने में काफी मदद मिली।

तीसरे खण्ड में, भाषा और व्याकरण के कई पहलुओं पर गौर किया जाता है। भाषा के नियम सीखने की बच्चों की अपनी क्षमता पर इस खण्ड के लेख हमारा ध्यान खींचते हैं। इसमें सबसे महत्वपूर्ण लेख लगा, गैर-सरकारी संस्था मुस्कान के बहुभाषीय कक्षा में व्याकरण के नियमों पर कार्य करने के अनुभव। अन्तिम और चौथा खण्डभाषा और समाज के सम्बन्ध पर विचार करता है। इसमें भाषा की राजनीति की कई परतें खुलती हैं जो कुछ भाषाओँ को भाषा और कुछ को बोली बना देती हैं, कुछ कक्षाओं में पाई जाती हैं और कुछ नहीं, कुछ को सर्वश्रेष्ठ दर्जा मिलता है और कुछ को नहीं, कुछ में साहित्य निर्मित होता है और कुछ में नहीं तथा आज के समय में भी बहुभाषिकता पर छिड़ी हुई बहस पर भी बात होती है। रमाकान्त अग्निहोत्री का लेख ऐसी कई मान्यताओं की पड़ताल करता है। विभिन्न भारतीय भाषाओं का उदाहरण लेते हुए 23वाँ लेख भाषाओँ की समानताओं और भिन्नताओं पर तर्कपूर्ण प्रक्रिया से हमें ले जाता है। किताब के अन्त तक पहुँचते हुए मन में और समझने की जिज्ञासा बन जाती है।

हिन्दी में ऐसा संकलन कई मायनों में महत्वपूर्ण है। ये चार खण्ड, भाषा पर हमारी समझ को एक विस्तार देते हैं। पर इस विस्तार को समेटना एक शिक्षक या बच्चों के साथ भाषा पर काम कर रहे लोगों के जिम्मे है। लेखों को पढ़ने के आगे इन लेखों पर विचार विमर्श फिर भी आवश्यक रहेगा।